विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -20 - 10 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् आज उपसर्ग के बारे में अध्ययन करेंगे।

उपसर्ग

उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना होता है उप+सर्ग। उप का अर्थ होता है समीप और सर्ग का अर्थ होता है सृष्टि करना। संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओँ में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग कहते है।

संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत में 21 उपसर्ग होते हैं। यह हमेशा मूल शब्द के आगे लगते हैं और एक से दो अक्षर लम्बे ही होते हैं। संधि के बाद जो नया शब्द बनता है, वह मूल शब्द में कुछ-न-कुछ विशिष्ट जोड़ देता है।

संस्कृत के 21 उपसर्ग, उनके अर्थ और उदाहरण

- **अति – अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय**
- **अधि – अधिकार, अधिपति, अधिनायक**
- **अनु – अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन**
- **अप – अपयश, अपमान, अपकार**
- **अभि – अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख**
- **अव – अवगुण, अवनति, अवतार, अवनति**
- **आ – आजीवन, आगमन**

- **उत् – उत्कर्ष, उत्तम, उत्पत्ति**
- **उप – उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार**
- **दुर् – दुर्जन, दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार**
- **दुस् – दुस्साहस**
- **निर् – निरपराध, निर्जन, निराकार, निर्गुण**
- **निस् – निस्सार, निस्तार, निश्चल, निश्चित**
- **नि – निवारण, निपात, नियोग, निषेध**
- **परा – पराजय, पराभव, परामर्श, पराक्रम**
- **परि – परिजन, परिक्रम, परिपूर्ण, परिणाम**
- **प्र – प्रख्यात, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति**
- **प्रति – प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक**
- **वि – विदेश, विलाप, वियोग, विपक्ष**
- **सम् – संस्कार, संगम, संतुष्ट, संभव**
- **सु – सुजन, सुगम, सुशिक्षित, सुपात्र**